ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-5* August-2020
Anthology : The Research

"संकल्प शक्ति और अभाव : उपलब्धि आजाद हिन्द फौज की"

Resolve Power and Lack: Achievement of Azad Hind Fauj

Paper Submission: 15/08/2020, Date of Acceptance: 25/08/2020, Date of Publication: 26/08/2020

पूजा शर्मा
शोधार्थी,
इतिहास अध्ययन शाला,
पं. रविशंकर शुक्ल
विश्वविद्यालय, रायपुर
छत्तीसगढ़, भारत

डी.एन.खुटे
शोध निर्देशक एवं सहायक
प्राध्यापक,
इतिहास अध्ययन शाला,
पं. रविशंकर शुक्ल
विश्वविद्यालय, रायपुर
छत्तीसगढ़, भारत

सारांश

किसी महान उद्देश्य की प्राप्ति के लिए साधनों का सीमित होना उतनी बड़ी समस्या नहीं होती, जितनी अपने सिद्धांतों, नैतिकता और आत्मसम्मान को जीवित रखते हुए उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सहायता प्राप्त करना है। ब्रिटिश साम्राज्य जैसी महान शक्ति, जिसका सूर्य कभी अस्त नहीं होता था, को झुकाने के लिए पर्याप्त विदेशी समर्थन और सशस्त्र संघर्ष की आवश्यकता थी, तत्कालीन परिस्थितियों में यह दुष्कर कार्य था। नेताजी ने अपनी कूटनीतिक कौशल से न केवल राजनयिक समर्थन और आर्थिक सहायता प्राप्त की, अपितु अपने उच्च कोटि के प्रबंधन के माध्यम से विदेशी भूमि पर स्वयं के लिये सहयोग अर्जित किया।

Limiting the means to achieve a great objective is not as big a problem as keeping your principles, morals and self-respect alive and getting help for accomplishing that purpose. Substantial foreign support and armed struggle were needed to bow down to a great power like the British Empire, whose sun never set, this was a difficult task under the circumstances. Netaji gained diplomatic support and financial support not only through his diplomatic skills, but through his superior management, earning himself support on foreign lands.

मुख्य शब्द : संघर्ष, संप्रभुता, आत्मसम्मान, आर्थिक प्रबंधन, विध्वंसात्मक युद्ध।
Conflict, Sovereignty, Self-Respect, Economic Management, Subversive Warfare

प्रस्तावना

विदेशी सहायता के संबंध में आजाद हिन्द रेडियो पर अपने सैनिकों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा था कि ''जब तक हमें आवश्यकता नहीं होगी, हमारे ये मित्र जो हमारी स्वतंत्रता हेतु चिंतित हैं, स्वयं से हमें सहायता का प्रस्ताव नहीं देंगे और अपने राष्ट्र के सम्मान और आत्महित के लिए हमें तब तक सहायता की मांग नहीं करनी चाहिए, जब तक हम इसके अभाव में कोई कार्य करने में समर्थ न हो।''[1] अस्तु तत्कालीन परिस्थितियों की विवशता में उन्होंने विदेशी सहायता स्वीकार की परन्तु उनकी महत्वपूर्ण उपलब्धि थी कि इन सभी कार्यों में उन्होंने अपने लक्ष्य, देश के आत्मसम्मान और संप्रभुता से किंचित भी समझौता नहीं किया।

अपने लक्ष्य और आत्मगौरव पर अटल रहते हुए कभी उन्होंने साधनों की परवाह नहीं की। श्री अरविन्द की भॉति ही सुभाष ने भी भारतीय स्वराज्य संघर्ष के लिए अपनायी जाने वाली तकनीकों के संबंध में लचीला दृष्टिकोण अपनाया था।[2] एक बहुआयामी विचारों वाले नेता के लिए अपने कार्यों की व्यवहारिक परिणति की दृष्टि से यह दृष्टिकोण समय की आवश्यकता थी। आजाद हिन्द फौज का लक्ष्य भारत की स्वतंत्रता होते हुए भी, इसके कार्य बहुआयामी थे। इसने एक विशाल सेना जो ब्रिटिश सेना का सामना करने में समर्थ हो, को प्रशिक्षित किया। इसके साथ–साथ कल्याणकारी कार्य, विद्यालय, अस्पताल, रोजगार की व्यवस्था, बैंकों का संचालन, पुनर्वास तथा आश्रयदाता कार्य एवं विस्थापित भारतीयों की भूमि की व्यवस्था आदि कार्य किये।

इन सबके साथ–साथ एक भविष्य दृष्टा होने का प्रमाण देते हुए नेताजी ने अस्थायी सरकार की नींव रखी, जिसे विध्वंसात्मक युद्ध के पश्चात पुनर्निर्माण की दृष्टि से प्रशिक्षित किया गया था। इसमें सरकार के सभी मुख्य

विभागों के अनुभवी व्यक्तियों के साथ–साथ नागरिक प्रशासन ने प्रशिक्षित कृषक, बढ़ाई, लुहार, पोस्टमेन, वायरलेस आपरेटर्स, ट्रक चालक, सड़क निर्माणकर्ता तथा अन्य कारीगर थे; जो ध्वस्त ग्रामों एवं नगरों में पुनर्निर्माण का कार्य करने को तैयार थे।[3] इन सभी के प्रबंधन, प्रशिक्षण और संचालन हेतु पर्याप्त संसाधनों की आवश्यकता थी।

इन सबके अतिरिक्त एक विशाल, प्रशिक्षित, आधुनिक तकनीकी से परिपूर्ण सेना का निर्माण स्वयं में एक चुनौती थी। विदेशी सहायता और संसाधन सीमित मात्रा में उपलब्ध थे, परन्तु आवश्यकता उससे कहीं अधिक थी। हमेंशा की तरह धन एक बड़ी समस्या थी। नेताजी को दोनों दिशाओं में काम करना था। जापानी वित्त के अभाव में वह कार्य नहीं कर सकते थे, उन्हें लगता था कि भारत के लिए सहायता स्वीकार कर ली गयी है, लेकिन उन्हें और उनके अनुयायियों को यह पता था कि जापानी धन, जापानी आदेशों का पालन नहीं किया करते।[4] वहीं दूसरी ओर विदेशियों का संशय, भारतीयों के प्रति भेदभाव और कठपुतली के समान व्यवहार की प्रवृत्ति ने अभावों को जन्म दिया। सैनिक, युद्ध बंदी और नागरिक दोनों प्रकार के थे, उन्हें प्रशिक्षित करने की अपनी समस्यायें थी। जो सिर्फ जीवनयापन करने के लिए सेना में आये थे, वे अप्रशिक्षित और कुपोषित थे। जो युद्धबंदी थे, उनके हारे हुए मनोबल को खड़ा करना और उनको विदेशी सरकार के प्रति पूर्वाग्रहों से मुक्त करना, काफी कठिन कार्य था, जिसके लिए उनके स्वाभिमान और आत्मसम्मान की रक्षा भी आवश्यक थी।

''कैप्टन मोहन सिंह द्वारा आजाद हिन्द फौज का गठन करने के पश्चात उन्हें बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। सामग्री और रसद जो जापानियों द्वारा प्रदान किये जाते थे, उनकी मात्रा और गुणवत्ता संतुष्टिजनक नहीं थी।''[5] सेना की संख्या सीमित करने के लिए उन पर दबाव डाला गया, बर्मा से अंग्रेजों के निष्कासन के पश्चात जापानी सेना ने विस्थापित भारतीयों की संपत्ति के साथ शत्रु की तरह व्यवहार किया।[6] परन्तु सबसे अधिक आपत्तिजनक बात यह थी कि इस सहायता के बदले भारतीय सेना के हर मुद्दे पर अनावश्यक हस्तक्षेप किया जाता था और उनके द्वारा भारत की स्वतंत्रता के संबंध में वांछित घोषणा की मांग को भी स्वीकार नहीं किया गया; जो अंततः इसके विघटन का कारण बना।[7]

नेताजी के जापान पहुॅचने के बाद परिस्थितियों में आश्चर्यजनक परिवर्तन आये, परन्तु संसाधनों का अभाव बना रहा। नेताजी के ओजपूर्ण भाषणों से प्रेरित होकर सेना में विशाल संख्या में भर्तियॉ प्रारंभ हुई; लेकिन उनका प्रबधंन एक चुनौती था। ''अक्टूबर 1943 तक यह खर्च महीने का एक मिलियन डालर (£.l16700) हो गया था और वित्त विभाग के चटर्जी ने देखा कि नयी भर्ती और प्रशिक्षण में नये प्रोजेक्ट का विकास करने पर ये खर्च 5 गुना बढ़ जायेगा।[8] अतः सीमित संसाधनों के प्रबंधन के अनेकों उदाहरण सामने आये। सेना की केवल एक ही डिवीज़न के पास शस्त्रों की आदर्श उपलब्धता थी; सेना के जवान जूते हाथ में लेकर मार्च किया करते थे; ताकि युद्ध के समय तक जूते खराब न हो जाये; जिससे उनके पैरों में छाले पड़ जाया करते थे। राशन की कमी और गुणवत्ता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि एक बार रानी झांसी रेजीमेंट को अधिक राशन मिलने की शिकायत होने पर अधिकारियों के समक्ष राशन दिखाकर उसकी मात्रा और गुणवत्ता की जांच व पुष्टि करायी गयी थी।

गरीबी इस सीमा तक पहुॅच गयी थी कि आजाद हिन्द फौज में भर्ती के नाम पर जापानियों ने बहुत से भारतीयों को थाईलैंड–बर्मा रेल्वे लाईन निर्माण कार्य में यमलोक की यातनाऍ भुगतने के लिए झोंक दिया था। वे गरीब दक्षिण भारत के निवासी थे; जंगल की भूखमरी, कुपोषण, बिमारियों ने उन्हें अपना ग्रास बना लिया था और अंत तक उन्हें मुक्त नहीं कराया जा सका।[9] युद्ध के दौरान ऐसे कई संस्मरण आते हैं जहॉ सेना को कई दिनों तक घास खाते और मरे हुए जानवरों का मांस खाकर गुजारा करते देखा गया हो। इस समय भी नेताजी यह कहकर जवानों का मनोबल बढ़ाते थे ''अपनी स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए जितना अधिक आप पीड़ित होंगे और त्याग करेंगे; विश्व की दृष्टि में भारत की प्रतिष्ठा में उतनी ही अधिक वृद्धि होगी।[10]

इस संदर्भ में इम्फाल अभियान का उल्लेख करना समीचीन प्रतीत होता है; जहॉ आजाद हिन्द फौज की पराजय का एक प्रमुख कारण संसाधनों का अभाव रहा। युद्ध के समय होने वाली मूसलाधार बारिश ने रसद और संसाधनों का मार्ग ध्वस्त कर दिया था। एक तरफ अंग्रेजों और अमेरिकियों का विशाल हवाई बेड़ा था; जिससे विरोधियों को रसद और हथियारों की लगातार आपूर्ति होती रही; वहीं दूसरी तरफ आजाद हिन्द फौज और जापानी सैनिकों के इलाके दुर्गम पहाड़ों और नदी–नालों में होने के कारण उन तक कोई भी सहायता नहीं पहुॅच पायी।[11] शत्रु सेना इम्फाल को बचाने के लिए कठिन युद्ध कर रही थी; क्योंकि माउण्टबेटन मुख्यालय से उन्हें आज्ञा मिली थी कि इम्फाल को प्रत्येक दशा में बचाना है।[12] इस सर्वशक्तिमान शत्रु से केवल आत्मबल के द्वारा कब तक संघर्ष किया जा सकता था; अतः आजाद हिन्द फौज को लौटना पड़ा।

वापसी की यात्रा; परिवहन के संसाधनों के अभाव में रानी झांसी रेजीमेंट की महिलाओं को सुरक्षित पहुॅचाना, एक समय का भोजन और तीन दिवस की पैदल यात्रा अति संघर्षपूर्ण कही जा सकती है। ''महिलाओं ने साल्टोंग नदी तक 10 मील तक पैदल यात्रा की, जब तक जापानियों को पर्याप्त वाहन नहीं मिले, वे रात्रि मार्च करते रहे। नेताजी के व्यक्तिगत साहस, सहपीड़ा, अथक परिश्रम और नेतृत्व ने सभी को प्रभावित किया।[13]

इन समस्याओं का अर्थ यह नहीं है कि वे विदेशी सहायता पर निर्भर रहें या स्वतः सृजन का प्रयास उन्होंने नहीं किया। बैंकांक सम्मेलन के प्रस्तावों में ही उन्होंने आजाद हिन्द फौज की युद्ध परिषद को पूर्वी एशिया से चंदा इकट्ठा करने का अधिकार प्राप्त करा लिया था।[14] इस हेतु कतिपय अन्य प्रयास भी किये गये। नेताजी ने अपने भाषणों में अपील करते हुए कहा कि ''जब एक देश युद्ध की स्थिति में होता है तो निजी

संपत्ति जैसी कोई चीज नहीं होती..... अगर आपको ऐसा लगता है कि आपकी संपत्ति के मालिक आप हैं तो आप धोखे में है। आपका जीवन और आपकी संपत्ति, आपकी नहीं है। इसका संबंध केवल और केवल भारत से है।[15] इस आंदोलन हेतु सिर्फ भारतीयों से धन लिया जाता था। विभिन्न साधनों सें नेताजी द्वारा इस प्रकार संपत्तियॉ अर्जित की गयी।[16]

1. जनवरी 1945 के दो ही सप्ताह में मलाया में 40 लाख डॉलर जमा हुआ था, मलाया में इकट्ठी हुई रकम करोड़ों में पहुॅच गयी।
2. भारतीयों को जमीनें दिलाकर आबाद करने हेतु 12000 एकड़ से अधिक वीरान जमीन साफ करके खेती के लिए भारतीयों को दी गयी।
3. थाईलैण्ड में ग्वालों से लेकर श्रीमंतों (सेठों) तक आजाद हिन्द फंड में अपने खून पसीने की कमाई से (50 लाख रूपये) डेढ़ करोड़ निकल्स एकत्र किये। सबसे अधिक रसद एवं युद्ध सामग्री यहीं से प्राप्त हुई।
4. बर्मा में 8 करोड़ से अधिक धन जमा हुआ। यहॉ प्रेरक के रूप में श्री ए. हबीब एवं श्रीमती बेताई ने अपना सर्वस्व समर्पण किये जिसके लिए इन्हें 'सेवक–ए–हिन्द' पदक से सम्मानित किया गया।
5. आजाद हिन्द फौज के सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा भी 5000 डॉलर का फंड एकत्र किया गया।
6. पूर्वी एशिया में जियाबाड़ी का राज्य को 50 वर्गमील लबा चौड़ा तथा 15000 की आबादी वाला था। आजाद हिन्द संघ को प्रदान किया गया।

इसी प्रकार सुमात्रा, बोर्नियो, जावा, इंडोचाइना, हांगकांग, शंघाई, फिलीपीन्स, जापान से कापी भारतीय नागरिक सेना में भर्ती होने लगे। शंघाई और हांगकांग से संपत्ति भी प्राप्त हुई। नेताजी द्वारा रैलियों में अपनी माला नीलाम की जाती थी, जिसके लिये लाखों रूपयों को बोली लगती थी। यूरोप में अपने प्रवास के दौरान जर्मनी और इटली से भी सहायता का वचन प्राप्त किया गया था। ''इसमें आजाद हिन्द फौज के सैनिकों को प्रशिक्षण रेडियो संचार सुविधा तथा सेना के जवानों के लिये भोजन, कपड़े, वेतन, अवकाश की सुविधा जर्मन सैनिकों के समान दिये जाने का वचन दिया गया था।''[17] जापान ने भी अंडमान निकोबार के प्रदेश आजाद हिन्द संघ को सौंप दिये।[18] इसके अतिरिक्त प्रशिक्षण, शस्त्र, गोला–बारूद, रेडियो संचालन हेतु विभिन्न देशों से सहायता प्राप्त की गयी।

इन संसाधनों की मात्रा आजाद हिन्द फौज के बहुआयामी कार्यों के समक्ष कम थी। ''बोस को इन फुटकर रूपयों से अधिक की आवश्यकता थी। उन्होंने यह महसूस किया कि उन्हें भारतीय संपत्ति के लिए एक उगाही वाली व्यवस्थित संस्था का निर्माण किया जाना था।''[19] युद्ध के भीषण संकट में पुनर्वास, उपचार, सेवा तथा सहायता के कार्य किये गए। इस समय अपने सैनिक और असैनिक दोनों दायित्वों का स्मरण कराते हुए नेताजी ने कहा था कि ''आपको यह स्मरण होना चाहिये कि आपके सैनिक व राजनीतिक दायित्व दिन–प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे हैं और आपको उन्हें वहन करते हुए सक्षम होना चाहिए।''[20] अस्थायी सरकार की स्थापना का उद्देश्य ही आजाद हिन्द संघ को नागरिक प्रशासन संबंधी कार्यों का संचालन था। अतः इन दोहरे कार्यों हेतु संसाधनों की उपलब्धता आवश्यकता से कम रही।

सेना में भर्ती होने वाले लोग विभिन्न वर्गो यथा कृषक, मजदूर, नागरिक, युद्धबंदी सभी थे। इनकी शिक्षा और स्वास्थ्य पर काफी परिश्रम करना पड़ा। उन्हें अंग्रेज सेना का सामना करने के लिए न सिर्फ शारीरिक अपितु मानसिक रूप से भी तैयार किया गया। कुछ आश्रयदाता कार्य भी किये गए। ''क्वालालपुर इसका केन्द्र था, जहॉ प्रतिदिन एक हजार स्त्री–पुरूषों व बच्चों को सहायता दी जाती थी, जिसका मासिक खर्च 75000 डॉलर से अधिक था। हिन्दुस्तानियों की शिक्षा के संबंध में जितना कार्य युद्ध के 3 वर्षो में हुआ उतना पहले कभी नहीं हुआ था।'' प्रथम श्रेणी के अस्पताल बनाए गये, जहॉ दवाइयों और डॉक्टरी सहायता के साथ–साथ भोजन और वस्त्र की सहायता भी की गयी।''[21]

''चंदे के माध्यम से इकट्ठी की गयी संपत्ति के कुशल संचालन हेतु 'सेंट्रल वार्ड ऑफ मैंनेजमेंट' का गठन किया गया। इसके द्वारा दानकर्ताओं की रसीद, चल–अचल संपत्ति के मूल्यों का निर्धारण, धन के आगमन और निर्गमन तथा अन्य अर्थ संबंधी नीति निर्धारण के कार्य किये जाते थे। इसके अतिरिक्त एक ऑडिट विभाग भी था जो नियमित रूप से परीक्षण का कार्य करता था। आपूर्ति विभाग केकार्य सराहनीय थे, क्योंकि संपर्क सूत्रों की कमी, बिखरे हुए क्षेत्रों ने आपूर्ति, भोजन और कच्चे माल में आत्मनिर्भरता के अभाव औरआपूर्ति क्षमता से अधिक आवश्यकता की समस्याओं के होते हुए भी इसने सफलतापूर्वक कार्य किया। व्यापारियों, टेलीग्राम, डाकसेवा तथा टेलीफोन के माध्यम से इसने अपने नेटवर्क स्थापित किये थे।''[22]1944 में रंगून में एक बैंक पचास लाख की पूंजी से स्थापित किया गया। चंदे का सारा धन इसी में जमा होता था। तात्कालीन समय की एक रसीद प्राप्त होती है, जिसके विवरण के अनुसार युद्ध के व्यय, अन्य देशों से वित्त का आदान–प्रदान तथा सेना की आवश्यक वस्तुओं की खरीददारी का भुगतान बैंक के माध्यम से किया जाता था।[23]''मई 1945 में अंग्रेज अधिकारियों ने रंगून में प्रवेश करने के बाद जब बैंक को बंद किया तब उसमें 30 लाख डॉलर नकद जमा था।''[24]

आजाद हिन्द फौज के इन संघर्षो में उसकी सबसे उपलब्धि सहायता प्राप्त करना या संसाधन स्वयं सृजित करना नहीं थी, अपितु अपने जन्म के समय से लेकर अंतिम श्वांस तक इसने अपने लक्ष्य, आत्मसम्मान तथा देश की संप्रभुता के साथ कोई समझौता नहीं किया। इसी प्रयास के चलते प्रारंभ में इसे विघटन का सामना भी करना पड़ा, परन्तु नैतिक स्तर पर उसने कोई विकल्प तलाश नहीं किये। जर्मनी में नेताजी को सर्वसुविधाऍ और पर्याप्त सम्मान दिया गया।''हिटलर ने उन्हें आर्थिक सहायता का वचन दिया।''[25] परन्तु जब भारत के भविष्य और राजनीतिक विचारधारा के प्रश्न पर उन्होंने दो टूक उत्तर दे दिया कि ''मेरी तो पूरी जिंदगी ही राजनीति में बीती है और मुझे किसी प्रकार की नसीहत की जरूरत नहीं।''[26]''जर्मनी के संबंध में आर्थिक सहायता भी उन्होंने

ऋण के रूप में प्राप्त की जिसकी वापसी युद्ध समाप्ति के पश्चात होनी थी तथा पूर्वी एशिया में प्राप्त फंड से जर्मन राजूत को टोकियो में 5,00,000 येन वापस लाटाए।''[27] जापान तथा इटली से अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कराने में उन्होंने सफलता प्राप्त की। पूर्वी एशिया के देशों के सम्मेलन में उन्होंने सभी राष्ट्रों के समक्ष यह स्पष्ट कर दिया कि जापान से सहायता लेने का अर्थ ब्रिटेन से स्वतंत्रता के बाद जापान के नियंत्रण में जाना नहीं है।

उनके द्वारा अस्थायी सरकार की स्थापना और अन्य देशो द्वारा समर्थन प्राप्त करने का अर्थ ही उनके द्वारा अपनी संप्रभुता की घोषणा करना था। 21 अक्टूबर 1943 को दिल्ली में इसकी घोषणा करते हुए कहा गया कि ''अस्थायी सरकार हर भारतीय की निष्ठा का दावा करती है और इसके सभी नागरिकों को धार्मिक स्वतंत्रता, समानता और अवसर की समानता सुनिश्चित करती है।''[28] ''अपने सैनिकों को उनका स्पष्ट निर्देश था कि ''अगर कोई जापानी किसी भारतीय नागरिक को प्रताड़ित करे या भारत की आजादी के खिलाफ कोई काम करे तो उसे वहीं गोली मार दी जाए।''[29] भारत की स्वतंत्रता और भारतीय जनता से संबंधी मुद्दो पर वह हमेशा संघर्ष को उद्यत रहे। चाहे थाईलैण्ड बर्मा रेल मजदूरों की सेवा और पुनर्वास का प्रकरण हो या अंडमान में भारतीयों पर किये गये अत्याचार का प्रतिशोध। वे सदैव भारतीयों के न्याय हेतु लड़ते रहे। उन्हीं के प्रयासों से अंडमान में 600 भारतीयों को मुक्त कराया जा सका। अपने स्वतंत्रता के लक्ष्य की पूर्ति में वे न तो विदेशी सहायकों के समक्ष हिचकिचाए और न अंग्रेजी शासन द्वारा उन्हें धुरी राष्ट्रों की कठपुतली कहने पर विचलित हुए।

नेताजी ने न सिर्फ भारत के स्वाभिमान को विदेशों में जीवित रखा, अपितु आजाद हिन्द संघ के प्रत्येक अंग में भारत की आत्मा को संजोने का प्रयास किया। अगस्त 1942 में उन्होंने कहा था कि ''एक सरकार को संपूर्ण राष्ट्र को एक करने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए, इसमें प्रचार साधनों जैसे प्रेस, रेडियो, सिनेमा का उपयोग किया जाना चाहिए।''[30] आजाद हिन्द संघ में इस दायित्व को उन्होंने भली प्रकार निभाया। ''यद्यपि वे सैनिक भिन्न–भिन्न धर्म, वर्ग के थे, परन्तु एक बार प्रशिक्षण में आने के बाद वे सभी भेद भूला दिया करते थे। छः माह के प्रशिक्षण में उन्हें कोई अवकाश न था। हिन्दुओं और मुसलमानों की धार्मिक भावनाओं को समझते हुए भोजन में बीफ और पोर्क की व्यवस्था नहीं रखी गयी थी।''[31] परन्तु स्वतंत्रता संर्घ में कठोर अनुशासन का पालन किया जाता था। ''आजाद हिन्द फौज के किसी भी सैनिक द्वारा कायरतापूर्ण व्यवहार करने या विश्वासघात करने पर बिना रैंक का भेद किये उसे गिरफ्तार करने या गोली मारने का आदेश दिया गया था।''[32]

''एक क्रांति को जन्म देने के लिये दो चीजों की जरूरत होती है; जन और धन। भारत में यह संभव नहीं परन्तु भाग्य ने यहॉ हमें लोग देदिये। प्रश्न यह नहीं कि जर्मनी और हमारी माली हालत क्या है, क्योंकि जितना धन हमें चाहिए, उसकी कमी नहीं होगी। प्रश्न यह है कि नफे–नुकसानका विचार कर जोखिम कौन उठाता है।'' भारतीय स्वतंत्रता की योजना बनाते समय नेताजी अपने विचारों में स्पष्ट थे।[33] यह उनकी संकल्प शक्ति ही थी कि अपने सहायकों के समक्ष भी वे अपने विचारों और लक्ष्यों में वे स्पष्ट और अडिग रहे। इस प्रकार जापानी सदैव यह ध्यान रखते थे कि भारत की प्रभुसत्ता, निष्ठा एवं स्वतंत्रता को प्रभावित करने वाले विषयों पर नेताजी के साथ उनकी स्थिति कहॉ है। नेताजी ने यह स्पष्ट कह दिया था कि अंग्रेजों की जगह जापानियों को अपना स्वामी बनाने की अपेक्षा वे भारत को अंग्रेजों की परतंत्रता में दो सौ वर्ष और रखना पसंद करेंगे।''[34] इस छवि का प्रभाव यह हुआ कि विदेशी शक्तियॉ भारत को स्वतंत्र कराने की हमारी क्षमता के प्रति आश्वस्त रहीं और हमारी सहायक बनी।

अस्तु निप्पन टाइम्स नामक जापानी अखबार ने 24 मार्च 1944 को टोक्यो से बर्मी रक्षा मंत्री, थाकिन आंगसान की यह घोषणा प्रकाशित की–''आजाद हिन्द फौज का भारत की धरती पर युद्ध के लिए जाने का मतलब भारत में स्वतंत्रता का उदय है। यह कार्य शेष भारत को उठ खड़े होने और ब्रिटिश अत्याचारों के विरूद्ध लड़ने के लिए प्रेरित करेगा और स्वतंत्रता प्राप्त होगी।''[35] परिस्थितियॉ परिवर्तित होती तो यह सत्य होता परन्तु इतिहास को कदाचित यह स्वीकार्य न था।

अध्ययन का उद्देश्य

संकल्प शक्ति और अभाव: उपलब्धि आजाद हिन्द फौज की विषय में मेरे शोध का उद्देश्य आजाद हिन्द फौज की विभिन्न समस्याओं और उनके समाधान के लिए नेताजी द्वारा किए गए कार्यों को खोजना है। इस शोधपत्र में आजाद हिन्द फौज की संघर्षशील प्रवृति को भी प्रस्तुत किया गया है। वस्तुत: आजाद हिन्द फौज क`सबस`बड़ी उपलब्धि यही थी कि उसने अपने सीमित साधनों में भी निरंतर संघर्ष करते हुए अपने लक्ष्य को नहीं छोड़ा। देशभक्ति की उत्कट भावना को आजाद हिंद फौज के संघर्ष के रूप में प्रस्तुत करना इस शोध का उद्देश्य है।

निष्कर्ष

इतिहास ने कई स्वतंत्रता संघर्ष देखे हैं परन्तु विदेश की धरती पर विदेशी संसाधनों से बनकर भी भारतीय आत्मा को संजोए हुए आजादहिन्द फौज अपने आप में अनूठा संगठन था। इसकी देह का निर्माण जिन विदेशी तत्वों से हुआ था, इसकी आत्मा पर उनका लेशमात्र भी प्रभाव नहीं था। ये नेताजी का प्रबंधन और कौशल ही था कि इतने अपमान, अभाव और संघर्षों को सहते हुए भी आजाद हिन्द फौज एक प्रबल सैन्य क्षमता युक्त सेना ही नहीं अपितु पूर्वी एशिया में भारतीयों की अपनी नीति निर्धारक और कल्याणकारी सरकार बन सकी, जो अपने निर्णयों में संप्रभु, लक्ष्य में निश्चित और विदेशी शक्ति से लड़ने में सक्षम थी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *नेताजी केलक्टेड वर्क्स,'राइटिंग एण्ड स्पीच्स' (1941–1943) आजाद हिन्द, सुभाष चंद्र बोस, नेताजी सुभाष ब्यूरो, 31 अगस्त 1942, आजाद हिन्द रेडियो, जर्मनी.*

2. साहू, एस.सी. सुभाष चंद्र बोस :'पोलिटिकल फिलासफी' एपीएच पब्लिकेशन कॉर्पोरेशन, नई दिल्ली 1997, पृ. 223.
3. कुमार, दिनकर, 'आजाद हिन्द फौज' प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1914, पृ. 110.
4. टोई, ह्युज, 'द स्प्रिंगिग टाइगर' जाइको पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1991, पृ. 138.
5. अय्यर, एस.ए. 'आजाद हिन्द फौज की कहानी' राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (NBT), 2019, पृ. 29.
6. पूर्वोक्त पृ. 33
7. सिंह, आर.पी. 'आजाद हिन्द फौज' ऍरागान पब्लिकेशन, 2015 पृ. 54.
8. टोई, ह्युज, पूर्वोक्त, पृ. 138.
9. सिंह.आर.पी. पूर्वोक्त, पृ. 75.
10. नेताजी केलक्टेड वर्क्स 'राइटिंग एण्ड स्पीच्स' (1941–1943) आजाद हिन्द, सुभाष चंद्र बोस नेताजी सुभाष ब्यूरो, 31 अगस्त 1942, आजाद हिन्द रेडियो, जर्मनी.
11. बोस, शिशिर कुमार, 'आजादी की लड़ाई में आजाद हिन्द फौज' राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (NBT), 2019 पृ. 53.
12. अय्यर, पूर्वोक्त, पृ. 53.
13. बिष्ट, एस.एम.बी., एन.एफ.आर., 19 जनवरी 2010. 'नेताजी सुभाष चंद्र बोस :आजाद हिन्द फौज एंड द रेलवेस' irfca.org/artical/ina-railway.html.
14. सिंह.आर.पी. पूर्वोक्त, पृ. 47.
15. टोई, ह्युज, पूवोक्त, पृ. 139.
16. सिंह.आर.पी. पूवोक्त, पृ. 73, 77, 130.
17. मूलर एवं भट्टाचार्य, 'सुभाष चंद्र बोस एंड इंडियन फ्रीडम स्ट्रगल' आशीष पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली, 1985, पृ. 51
18. सिंह.आर.पी. पूर्वोक्त, पृ. 127.
19. टोई, ह्युज, पूर्वोक्त, पृ. 141.
20. नेताजी केलक्ओड वर्क्स 'राइटिंग एण्ड स्पीच्स' (1941–1943) आजाद हिन्द, सुभाष चंद्र बोस नेताजी सुभाष ब्यूरो, बैंकाक कांफ्रेंस के लिए नेताजी का संदेश. 14 जून 1942
21. सिंह.आर.पी. पूर्वोक्त पृ. 75.
22. थिवि, जॉन ए 'द स्ट्रगल इन ईस्ट एशिया', नेताजी सुभाष ब्यूरो, कलकत्ता, 1971, पृ. 46.
23. डायरेक्टर, नेशनल बैंक ऑफ आजाद हिन्द फौज, रंगून, NAI-INA (1946) जनरल, सरदार पटेल प्राइवेट पेपर्स.
24. सिंह.आर.पी. पूर्वोक्त पृ. 124.
25. कुल्मान, जॉन, 'नेताजी इन यूरोप' (अनुवाद क्रिस्टल दास), रूपा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2012, पृ. 115.
26. सिंह.आर.पी. पूर्वोक्त, पृ. 93.
27. अय्यर, एस.ए. पूवोक्त, पृ. 21
28. शर्मा जगदीश शरण, इंडियन स्ट्रगल फॉर फ्रीडम, सलेक्टेड डॉक्यूमेंट एण्ड सोर्सेस Vol-2 2016, आजाद हिन्द सरकार की घोषणा, 21 अक्टूबर 1943.
29. कुमार, दिनकर, पूर्वोक्त, पृ. 101.
30. नेताजी केलक्टेड वर्क्स 'राइटिंग एण्ड स्पीच्स' (1941–1943) आजाद हिन्द, सुभाष चंद्र बोस नेताजी सुभाष ब्यूरो,, फ्री इंडिया एण्ड हर प्रॉब्लम, आजाद हिंद, 9 अक्टूबर 1942.
31. कुमार, रविंद्र, 'द सलेक्टेड वर्क्स ऑफ सुभाष चंद्र बोस' डॉक्यूमेंट–1, बोसेस लीडरशिप एण्ड इंडियन यूथ्स 8 अगस्त 1942.
32. शर्मा, जगदीश शरण, 'इंडियन स्ट्रगल फॉर फ्रीडम' सलेक्टेड डॉक्यूमेंट एण्ड सोर्सेस वाल्यूम–2 2016, आजाद हिन्द सरकार की घोषणा 21 अक्टूबर 1943.
33. नेताजी केलक्टेड वर्क्स 'राइटिंग एण्ड स्पीच्स' (1941–1943) आजाद हिन्द, सुभाष चंद्र बोस नेताजी सुभाष ब्यूरो, फ्री इंडिया एण्ड हर प्रॉब्लम, आजाद हिंद, 9 अक्टूबर 1942.
34. अय्यर, एस.ए. पूर्वोक्त, पृ. 51.
35. निप्पन टाइम्स, 24 मार्च 1944.